बिखरी - बिखरी

अणिमा उपाध्याय

लघुकथा संग्रह

आलोक प्रकाशन

बिखरी-बिखरी

C- 2018 अणिमा उपाध्याय

आलोक प्रकाशन

II

पाठकों से

प्रिय पाठकों, अभिवादन. इस बार मैं आप सबके लिए एक लघु-कथा "बिखरी-बिखरी" संग्रह लेकर उपस्थित हुई हूं. पूर्व में मेरे व्दारा रचित कथा संग्रह "सूत्रधार" आपने पढ़ा व सराहा, उसके लिए मैं आप सब पाठकों की दिल से आभारी हूं. मुझे उम्मीद है कि मेरा यह लघु-कथा संग्रह भी आपको अवश्य पसंद आवेगा. मेरा सदा यह प्रयास रहेगा की इसी प्रकार मैं अपनी रचनाओं व्दारा आप सभी का मनोरंजन करती रहूंगी व अपनी लेखनी व्दारा समाज के विभिन्न आयामों को जो हमारे आस-पास ही बिखरी-बिखरी हुई हैं आप सभी के समक्ष चिंतन व मनन हेतु प्रस्तुत करती रहूंगी.

अणिमा उपाध्याय

अनुक्रमणिका

क्र	कहानी	पेज नम्बर
1	नई मम्मी	1
2	आश्वस्त	4
3	क्षमा	8
4	कशमकश	11
5	मौकापरस्त	15
6	साध्वी	20
7	रेत का महल	25
8	पलटवार	28
9	बंजर	31
10	घोंसला	35
11	पिल्लू	39
12	ज़िम्मेदारी	43
13	फलसफा	45
14	घूंघट और पगड़ी	47
15	नदी	51

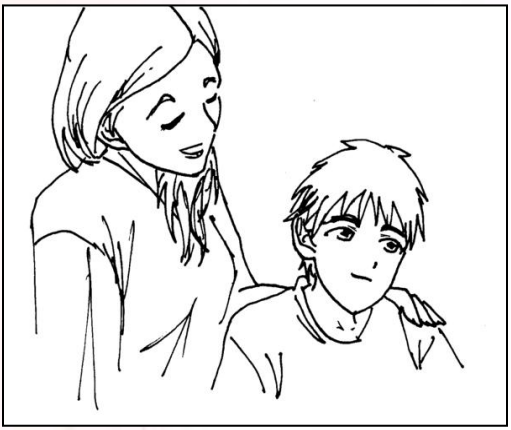

नई मम्मी

दादी रज्जू को खोद-खोद कर पूछ रही थीं कहां सोता है मेरा रज्जू बेटा अलग कमरे में, या पापा और नई मम्मी के साथ? स्कूल छोड़ने पापा जाते हैं या तेरी नई मम्मी? खाना तुझे नई मम्मी खिलाती है या अपने हाथ से खाता है? पढने के लिये कौन बिठाता है तुझे, पापा या नई मम्मी? क्या नई मम्मी तुझे कभी पढ़ाती

है, और अगर पढ़ाती है तो क्या प्यार से, या डांट-डपट के? रज्जू बड़ी मासूमियत से उनके हर प्रश्न का जवाब देता जा रहा था. आखिरकार उसके सब्र का बाँध टूट ही गया तो वह दादी से पूछ बैठा, दादी, “मम्मी तो बस मम्मी होती है न फिर मम्मी को बराबर नई मम्मी क्यों कह रही हो आप”, आगे से मेरी मम्मी को बस मम्मी ही कहना नई मम्मी- नई मम्मी मत कहना वरना मैं आपके पास आना ही छोड़ दूंगा.... हांSSS.....

दादी की बोलती अब बंद हो गयी थी और साथ में बेतुके प्रश्नों की बौछार भी. वह बस इतना ही बोल पाई अरे...रे..रे... मेरा राजा बेटा रूठ गया मुझसे. दरवाज़े की ओट में खड़ी रज्जू की मम्मी जो यह सब सुनकर रुआंसी हो रही थी अब एक नयी उर्जा और स्फूर्ति से भर गयी थी.

उसे अपने मातृत्व पर गर्व हो रहा था और साथ ही अपने बेटे रज्जू पर भी.

फ़ौरन भीतर आकर उसने रज्जू को अपने सीने में भींच लिया. मां-बेटा दोनो बारी-बारी अब एक-दूसरे की भीगी पलकें चूम रहे थे.

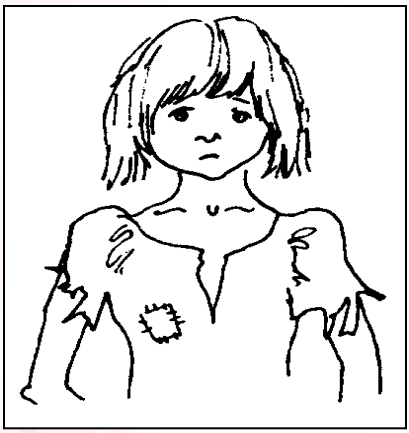

आश्वस्त

चार साल से मैं उसे देख रहा था. यहीं बस स्टॉप पर कभी पेन बेचती हुई दिखती तो कभी रुमाल. उम्र यही कोई दस-बारह की होगी. ना किसी से बतियाती न हंसती मुस्कुराती बस अपने काम से काम. वह न तो सुन्दर कही जा सकती थी न ही बदसूरत, बस सलोना सा

आकर्षक मुखड़ा. एक और बात थी जो उसकी ओर अनायास ही आकर्षित करती थी वह थी उसकी साफ़-सुथरे कपड़े. उसे देख कभी भी ऐसा न लगा कि यह कोई झोपड़पट्टी वाली है.

मैंने भी कभी-कभार उससे इक्का-दुक्का पेन खरीदे थे. पर इन चार सालों में मुझे याद भी नहीं पड़ता की मेरी कभी कोई बात भी हुई हो उससे. वह ठीक आठ बजे वाली बस पे बिक्री के लिये आ जाती और जब मैं शाम को पांच वाली बस से उतरता तो उसे वहीँ पेन या रुमाल बेचते देखता.. हां कभी-कभार यदि ऑफिस से आने में लेट हो जाता तो वह ना दिखाई पड़ती.

मैं उसे वहां देखने का अब अभ्यस्त सा हो गया था कभी भी न बदलने वाले सीन जैसा. इन चार सालों में मुझ में भी बहुत से परिवर्तन आये थे,

ज़ाहिर है वह भी अब युवा हो गयी थी और... भरी-भरी भी.

उस दिन शाम पांच बजे जब मै बस से उतरा तो वह लगभग दौड़ते हुए मेरे पास आई और बोली- “साहब मुझे अपने साथ घर ले चलिये मैं आपके घर का सारा काम करूंगी, मुझे सर पे छत मिल जाएगी बसर के लिए”. इससे पहले की मै कुछ बोल पाता वही बोल पड़ी. साहब कल रात मेरा बापू मर गया. अब मुझे वहां अकेले रहने में डर लग रहा है. रात होते ही भूंखे भेड़िये निकल पड़ते हैं सड़कों पर.

मैंने उसकी ओर देख पूछ ही लिया, पर आखिर तुम मुझपे विश्वास कैसे कर सकती हो? वह बोली - साहब आप अच्छे आदमी हैं इतने सालों में कभी भी मेरे पास आने की कोशिश नहीं की. पेन लेते समय भी कभी मुझे छूने की कोई

कोशिश नहीं की. मैं हंसा फिर भी रात के भेड़िये का क्या भरोसा अगर निकल पड़ा तो!! वो निर्विकार सी अब भी बड़ी उम्मीद से मेरी ओर ताक रही थी.

फिर कुछ सोचते हुए मै बोला अच्छा देखता हूं शायद तुम्हें मैं आज से ही वर्किंग वुमन होस्टल में रखवा सकता हूँ. वहाँ की मनेजर मेरी कज़िन है जो कल ही वहां के लिए मेड के विज्ञापन की बात कह रही थी. सो तुम वहीँ रहना भी और काम भी करना. अब वह पूर्णतया आश्वस्त व खुश थी. ढलते सूरज की किरणें उसे जैसे नये दिन का आगाज़ करती हुई सी प्रतीत हो रहीं थीं .

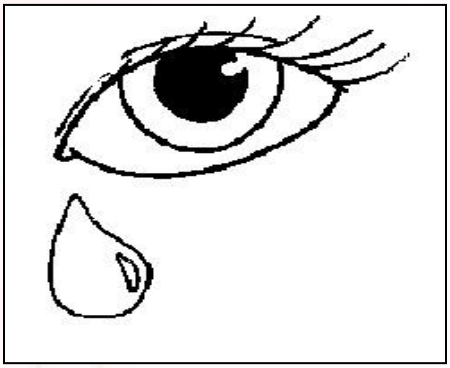

क्षमा

अस्पताल में अकेला बिस्तर पर पड़ा वह भगवान से अपनी मृत्यु की भीख मांग रहा है. उसका सारा शरीर सड़ गया है जिसकी सड़ांध सारे कमरे में फ़ैल गयी है. कोई भी उसके पास आने से कतराता है. यहां तक कि घर वालों ने भी उससे किनारा कर लिया है. डॉक्टर व नर्स भी चेहरे पर मास्क पहन कर कमरे में आते हैं व शीघ्रता से मुआयना कर बाहर निकल जाते हैं.

ताउम्र जो पाप किये थे वो शरीर से फूट-फूट कर बाहर आ रहे हैं. आज बेबस वो रो रहा है. परंतु नियति हंस रही है. इतनी ज़ल्दी क्या है, धीरे-धीरे.... सताने में ही तो मज़ा आता है, यही तो कहा करता था ना वो अपने शिकार से. तो फ़िर आज जब खुद पर बीत रही है तो इतनी पीड़ा क्यों हो रही है उसे आनंद क्यों नहीं आ रहा है. सन्नाटे को चीरती हुई बहुत सी आवाजें उसे सुनाई दे रहीं हैं. कभी उसके खुद के अट्टहास की.... तो कभी करुणा में भीगी डरी-सहमी सी दर्द से गिड़गिड़ाती आवाजें....

तड़प और वेदना उसके दिमाग पर हावी हो रही है. काल-भैरव मस्त हो नाच रहा है.... परंतु, उसे अपने साथ ले नहीं जाना चाहता. वह भी धीरे-धीरे उसकी यातना और पीड़ा का मानो आनंद उठा रहा है. क्षमा प्रभु क्षमा.... सहसा ही

बुदबुदाते हुए उसके दोनो हाथ ऊपर उठकर जुड़ गये हैं.....लेकिन अब किसी भी अहसास के लिए शायद बहुत देर हो चुकी है.

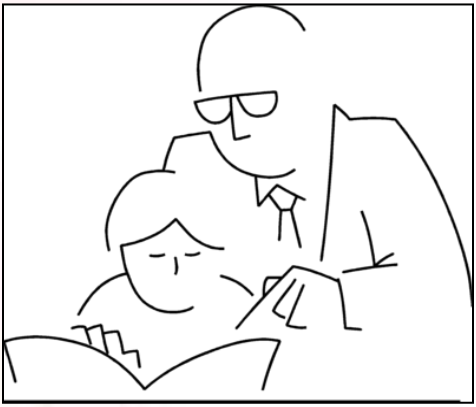

कशमकश

हर पिता की तरह यह वर्ष मेरे लिये भी बहुत चुनौतीपूर्ण था. इस वर्ष मेरे पुत्र अभय का किसी अभियांत्रिकी महाविद्यालय में एडमिशन जो होना था. मित्रों एवं रिश्तेदारों के अनुभवों को ध्यान में रख मैं किसी भी निष्कर्ष पे पहुँचने से पहले स्वयं कालेजों में जाकर वहां की वस्तु-स्थिति का जायज़ा लेना चाहता था.

एक दिन ऑफिस से समय निकाल मैं एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय पहुँच ही गया. बेसिक-साइंस विभाग से अपनी इस यात्रा का शुभारंभ करने की सोंच मैं सीधा वहीँ पहुंचा. बिल्डिंग में अंदर घुसते ही सामने रसायन-शास्त्र विभाग दिखा. वहां लगे बोर्ड पर विभाग की विस्तृत जानकारी पढ़ मैं बहुत ही प्रभावित होते हुए विभागाध्यक्ष से मिलने की सोंच उनके कक्ष के सामने पहुंचा. कक्ष के अंदर झांका तो पाया कि वहां कोई नहीं है. काफ़ी देर खड़े रहने के पश्चात् विभाग के सभी प्रबुध्दजन बाहर से टहलते हुए आते दिखाई दिये. मैंने घड़ी की ओर नज़र घुमाई तो पाया कि मुझे यहां खड़े-खड़े घंटा बीत चुका था. प्रोफ़ेसर साहब के अपने कक्ष में दाख़िल होते ही मैंने भी उनसे अंदर आने की अनुमति ले उनके कमरे में प्रवेश किया.

मैं अभी बैठा भी न था कि उनके मोबाइल फोन की घंटी घनघना उठी. उन्होंने मुझे बैठने का इशारा करते हुए अपना फोन उठा लिया. शायद दूसरी तरफ उनकी पत्नी थीं. वे उन्हें समझाते हुए बोले पूजा मैंने तुम्हें सुबह ही कहा था न कि सुब्रत को केमिस्ट्री की ट्यूशन लगवा दो. अब और हील-हुज्जत नहीं करो और तुम पैसों की चिंता क्यों करती हो? मुझे यहां से पर्याप्त वेतन मिलता है. फ़िर एक ही तो बेटा है हमारा. नहीं-नहीं, क्या कह रही हो तुम मैं.... अरे मैं कैसे? लगा उधर से पत्नी उन्हीं को बेटे को पढ़ाने पर जोर दे रहीं थीं. सो अंत में वो खीझकर लगभग चीखते हुए बोले तुम समझती क्यों नहीं पूजा.... मैं अब केमिस्ट्री बिल्कुल भूल चूका हूं. यहां कॉलेज में तो बस ऐसे ही थोडा-बहुत....

सहसा उन्हें ध्यान आया कि मैं उनके सामने ही बैठा हुआ उनकी बातें सुन रहा हूं. लिहाज़ा वे झल्लाकर चुप हो गये और अपना फोन डिस्कनेक्ट कर दिया. मैं भी अब स्थिति से वाकिफ हो चुका था. सो कुर्सी से उठा और उन्हें नमस्कार करते हुए फुर्ती से कमरे से निकल गया.

मौकापरस्त

अभी तक अविवाहित प्रशान्तो बॉस का बहुत चहेता था क्योंकि वह बॉस के लिये बाकी सहकर्मियों की जासूसी भी करता था. एक महिला सहकर्मी “शिखा” को तो उसने बॉस की गुड बुक्स में आने के लिए झूठा केस बनाकर बाहर का रास्ता तक दिखा दिया था. बॉस की शिखा पर शुरू से ही नज़र थी पर वह उनके काबू में ही नहीं आ रही थी. यहां तक की उसने

बॉस की हरकतों की शिकायत ऊपर वालों से भी कर दी थी. जिसकी वजह से बॉस के खिलाफ इन्क्वायरी बिठाई गयी थी. वक़्त की नज़ाकत समझते हुए प्रशान्तो ने मौके का फायदा उठाया व बॉस के फेवर में शिखा के खिलाफ झूठी शिकायत करने का बयान देकर बॉस को साफ़ बचा लिया. आंखों में आंसू भरे शिखा बस इतना ही बोल पायी थी, “भगवान से डरो प्रशान्तो इतना नीचे गिरना भी अच्छा नहीं”.

प्रशान्तो आज का सटीक सफल व्यक्ति उसे भला क्यों परवाह होती किसी चीज़ की. हां बस अपना विवाह ना हो पाना ही एक वजह थी जो उसे हमेशा सालती रहती. आखिर उम्र के इकतालीसवें पड़ाव पर उसका विवाह भी संपन्न हो गया. अब तो उसकी पांचों उंगलियां घी में

और सर कढ़ाई में था. ख़ुशी के मारे उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ते थे.

बॉस की चमचागीरी और कमज़ोर नस पकड़ के उसने अपनी तनख्वाह में भी अनाप-शनाप बढ़ोतरी करवा ली थी. सहसा एक दिन कालेज के अपने सहपाठियों से मुलाक़ात पर उसे मालूम हुआ कि न सिर्फ वे माता-पिता ही बन गए हैं बल्कि उनके बच्चे तो अब दस-बारह साल के भी हो गए हैं. उन सब से मुलाक़ात के बाद वह बच्चे के लिए जैसे बेचैन सा हो उठा.

उसकी पत्नी भी पैंतीस पार थी इसीलिए शायद गर्भ ठहरने में उसे दिक्कत हो रही थी. जुगाड़ू प्रशान्तो फर्टिलिटी क्लीनिक वगैरह के चक्कर काट आखिर पत्नी का गर्भ ठहराने में भी सफ़ल हो ही गया. बस अब उसे अपने बच्चे की किलकारी सुनने का इंतज़ार था. जल्दी ही वह

घड़ी भी आ गयी जब नर्स ने डिलीवरी रूम से बाहर आकर उसे पुत्र-प्राप्ति की खुश-खबरी दी. ख़ुशी के मारे भगवान का शुक्रिया अदा करना तो वह भूल गया परन्तु अपने बॉस को तुरंत मैसेज भेज पुत्र-प्राप्ति की इत्तला दी. सवा महीना बीतते ही बॉस के लिये पार्टी भी आयोजित कर डाली.

किन्तु यह क्या बच्चा दस-ग्यारह महीने का हो जाने के बाद भी न तो अन्य हम-उम्र बच्चों जैसे उनकी ओर देखता न ही कुछ बोलने की कोशिश करता. डॉक्टर को दिखाया तो उसने बहुत से टेस्ट व चेकअप किये व अंतिम निर्णय पर पहुँचने के पूर्व अन्य विशेषज्ञों की राय भी ली. अंत में उसके कंधे को थपथपाते हुए उससे कहा, “आप का बच्चा बेहद ख़ास है. उसे स्पेशल परवरिश की ज़रूरत है वह औटिस्टिक है”. प्रशान्तो के जेहन में “शिखा” की पनीली आँखें

उभर आयीं जो उसे हिकारत से देखते हुए मानो कह रहीं थीं, “भगवान के घर देर है मगर अंधेर नहीं”.

साध्वी

तुम..... चौंक गया सुधीर माया को देखकर. हां... यह वही माया थी, जिसे वह दिलो-जां से चाहता था. माया भी तो उसे वैसे ही चाहती थी. दोनों ने साथ मिल कर ढेरों सपने संजोय थे. परन्तु विधि को तो उनका मिलन मंज़ूर ही नहीं था. शादी की रात का वह मंज़र कितना भयावह था. कितनी तबाही हुई थी कुछ भी तो ना बचा था.

सुधीर बस पिता को ही किसी तरह ढही हुई दीवार से मुश्किल से निकाल पाया था. वह स्वयं

भी बेहद ज़ख़्मी था. पिता को निकालने व मदद के लिए चिल्लाने के सिवा वह कुछ ना कर सका था. ज़ख्म व सदमे से वह भी बेहोश हो गया था. आँख खुली थी तो अस्पताल में अपने आप को अकेला पाया था. नर्स से मालूम हुआ कि पिताजी ने अस्पताल पहुंचते ही दम तोड़ दिया था.

अस्पताल से छुट्टी होकर वह महीनो खंडहरों में अपने लोगों को ढूंढता रहा था पर कुछ भी सूराख हाथ न लगा था. माया व परिवार के अन्य सदस्यों को भूकंप शायद लील गया था. पागलों की तरह एक जगह से दूसरी जगह कहां-कहां नहीं भटका था वह, पर सारे प्रयास विफल रहे थे. किसी दूर के रिश्तेदार ने उसे आकर सहारा दिया था व अपने साथ लिवा ले गया था.

आज माया को सदेह अपने सामने देख वह समझ ही नहीं पा रहा था कि खुश होवे या दुखी. अजीब असमंजस है. तभी उसकी पत्नी माधुरी पीछे से आकर मुस्कुराते हुये उससे बोली, “अरे सुधीर आप यहां हैं मैं तो अन्दर आप ही को ढूंढ रही थी. जिनके बारे में मैंने आपको बताया था ना, यह वही साध्वी हैं. मैं इनकी बातों से प्रभावित होकर इन्हें अपनी मित्रों व आपसे मिलवाने अपने घर लिवा लायी. आज यह हम सबको अपनी अमृत-वाणी से सराबोर कर देंगी.”

सुधीर ने एक बार माया को कातर नज़रों से देखा और अपराधबोध से ग्रसित किसी मुज़रिम की भांति अपनी आंखें नीची कर लीं. माया से आंखें मिलाने का वह साहस तक नहीं जुटा पा रहा था. तभी माया की चिर-परिचित आवाज़

उसे सुनाई पड़ी. वह सभा को संबोधित करते हुए कह रही थी, “जो हो गया है वह होना ही था, इसपर ना मेरा वश है ना आपका, आज में जियें और आज को ही सुन्दर बनायें, नियति के आगे सभी को झुकना पड़ता है, यह जीवन विचित्र है इसे इसकी विचित्रता के साथ ही अपनाना चाहिये. जो ग़लती आपने की ही नहीं उसका मलाल करने की ज़रूरत भी नहीं. परन्तु भावावेश में बहकर कोई कदम उठाना जानबूझकर ग़लती करने के समान है. इससे सब को बचना चाहिये. क्योंकि.... वर्तमान ही सत्य है और वही सुन्दर है”.

सुधीर स्तब्ध था कितनी सहजता से माया ने उसे सारी समस्या का समाधान दे दिया था. माया की आंखों में ना तो कहीं क्रोध था न अपेक्षा, वहां तो सिर्फ दया व वात्सल्यता का

सागर था. वह जाते-जाते भी जैसे उसे एक नया जीवन उपहार में दे कर चली गयी थी.....

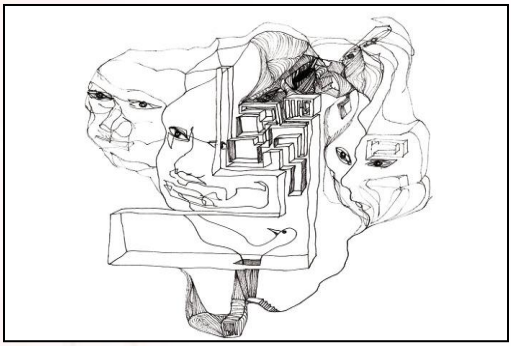

रेत का महल

“क्यों सपना नींद नहीं आ रही है क्या?” विशाल ने सपना को जागते देख पूंछ ही लिया. नहीं विशाल ....पर तुम भी तो नहीं सो पाये अभी तक... कैसे सोऊ सपना.... क्या करेंगे हम? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है मुझे.....बिना मेरी नौकरी के कब तक जी पायेंगे हम, इस बड़े शहर में!!! सपना ने ढाढस बंधाते हुए कहा- “हिम्मत क्यों हारते हो, विशाल मैं तो स्कूल में

काम कर ही रही हूं ना. जल्दी ही तुम्हें भी देखना फिर से किसी बड़ी कंपनी में कोई अच्छी नौकरी मिल ही जायेगी."

पर तुम्हारी अकेले की तनख्वाह और दो-दो बच्चे ऐसे कैसे और कब तक चलेगा. दस महीने हो गये मुझे, यूं ही खाली बैठे-बैठे. अब तो अपनी छोटी-मोटी जमा-पूंजी भी समाप्त हो चली है. पिताजी से भी पैसे मांगते मुझे शर्म महसूस होती है, मैं हताश हो गया हूँ. सोंचता हूं इस घर को बेंच कर वापस मां-पिताजी के पास ही चले जायें. फ़िर जैसे एकदम से निश्चय करते हुए वह बोला कल ही से सामान बांधना शुरू कर देंगे टीचर की नौकरी तो तुम्हें वहां भी मिल ही जायेगी. छोटी जगह में कम खर्च में भी आराम से गुज़ारा हो सकता है. मैं भी कुछ छोटा-मोटा बिजनेस वहां डाल लूंगा. बहुत हो गयी कंपनी में

इंजीनियर की नौकरी. देख रही हो कैसे मारे-मारे फ़िर रहे हैं इंजीनियर आज-कल. बस अब और नहीं.

हांSSS.....सपना बस इतना ही बोल पायी थी. बाकी के शब्द उसके मुंह में ही जम गए थे. विशाल से शादी के समय ही सपना के पापा ने अपने फण्ड का पूरा पैसा खर्च कर दिया था. इंजीनियर दामाद मिलने की खुशी में पापा ने उनके विवाह में दिल खोलकर खर्च किया था कोई कसर नहीं छोड़ी थी. फ़िर जब बेटी-दामाद ने घर खरीदने की ज़िद की थी तब भी उन्होंने ही मदद की थी विशाल की. सोंचा था कि चलो बेटी को उसके सपनों का महल तो मिल जाएगा महानगर में. आखिर यह उसका अपना घर होगा. उन्हें क्या मालूम था कि यह महल इतनी जल्दी ढह जाएगा किसी रेत के महल की तरह.

पलटवार

परेश शाम की चाय पीने बैठे ही थे कि पुत्री अंजली ऑफिस से लौटी. आज उसे अन्य दिनों की अपेक्षा आने में थोड़ी देर हो गयी थी. उन्होंने देखा कि वह रोज़ की तरह चहकती हुई नहीं आई थी बल्कि गुमसुम सी लौटी थी और सीधे अपने कमरे की ओर बढ़ गयी थी, बिना उनकी बात का कोई भी जवाब दिए हुए.

उन्होंने पत्नी की ओर इशारे से उसके पास जाने का संकेत किया. पत्नी उनकी बात मान उसके पास कमरे में चली गयीं थीं. थोड़ी ही देर में उन्हें अंजली की हिचकियां सुनाई पड़ीं. वे भी उसके कमरे की ओर लपके यह जानने के लिए की आखिर माज़रा क्या है? उनकी लाडली रो क्यों रही है?

वे अभी दरवाज़े तक ही पहुंचे थे कि अन्दर से मां-बेटी के बीच होते वार्तालाप को सुनकर सकते में आ गए. मां बॉस ने मुझे.....आगे के शब्द हिचकियों में रुंध गए थे. पत्नी उसे दिलासा दे रही थीं साथ ही उसके बॉस को भी धिक्कार रहीं थीं. कीड़े पड़ेंगे उसको एक दिन, अपनी करनी की सजा मिलेगी उसे, जब उसकी बेटी को कोई.....

बैठ गया था परेश का दिल. शायद अंजली को भी अपने पिता की करनी की सज़ा मिली है. वे आँखें पोंछते हुए वहां से वापस हो लिए थे.

आखिर वह किस मुंह से अंजली से बात कर पाते....नियति का पलटवार बहुत मंहगा जो पड़ा था.

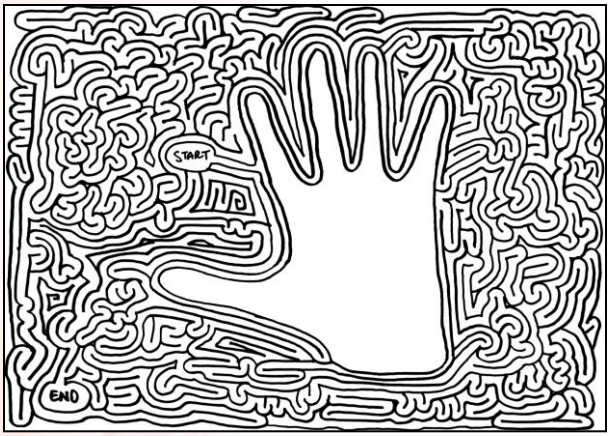

बंजर

रोहित रुआंसा सा मां के साथ सर के सामने खड़ा था. सर बेहद गुस्से में थे और कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे. मां हर संभव प्रयास कर रहीं थी सर को समझाने की पर वो थे की मान ही नहीं रहे थे. मैडम आप अपने बेटे को किसी और स्कूल में दाखिला दिलवा दीजिये. इसका दिमाग बिलकुल बंजर है. यह हमारे स्कूल के स्टैण्डर्ड में ज़रा भी फिट नहीं

बैठता. अब मैं आपकी और कोई भी दलील सुनना नहीं चाहता. यह रहा इसका टी.सी.

रोहित को याद है कैसे मां ने उसका हाथ अपने हाथ में मज़बूती से पकड़ा था. फिर दूसरे हाथ से उसके चेहरे को अपनी ओर उठा कर मुस्कराते हुए उसके बालों में उंगलियां फिरायीं थीं. उसके बाद सर को नमस्ते कर वह उसे अपने साथ लेकर घर आ गयीं थीं. इसके आगे के कई वर्षों तक का सफ़र मां के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण रहा था. उन्होंने रोहित को एक सरकारी स्कूल में भरती करवा दिया था. परन्तु उसे पढ़ाने का जिम्मा उन्होंने स्वयं अपने सर पर ही उठा लिया था. उन्होंने शायद प्रतिज्ञा कर ली थी कि रोहित को कुछ बना कर ही दिखायेंगी. वे शायद इस समाज को दिखाना चाहती थीं की प्रतिभा निखारी जाती है, पहचानी जाती है. कोई भी दिमाग बंजर नहीं होता.

उनकी प्रतिज्ञा का ही फल था कि आज रोहित यानि मैं इस प्रतिष्ठित कंपनी में सी.ई.ओ. के पद पर आसीन था. अभी ऑफिस पहुंचा ही था की किसी की चिट्ठी ले अर्दली कमरे में दाखिल हुआ. सर कोई सज्जन आपसे मिलना चाहते है. नाम पढ़कर मेरे होंठों पर हल्की सी मुस्कराहट आ गयी. मैंने उसे इशारे से उन्हें अन्दर भेज देने को कह टेबल पर रखी फ़ाइल में नज़रें गड़ा दी.

कुछ क्षण बाद वे अपने बेटे के साथ मेरे सामने खड़े थे उसकी सिफारिश लेकर. मुझे देख मुझसे नज़रें चुराते बस इतना ही बोल पाए थे, “क्या मेरे बेटे को यहां नौकरी मिल पाएगी”? यह सॉफ्ट वेयर इंजीनियर है पर आज के इस दौर में बस एक बेरोज़गार युवक है. मैं कुर्सी से उठा उनके पास आकर झुक कर उनके पैर छूकर हँसते हुए बोला ज़रूर मिलेगी इसे यहां नौकरी सर. यह हो या कोई और हर दिमाग खुबसूरत होता है बंजर नहीं... वह

भी अब तक मुझे ठीक से पहचान गये थे.... और मां आज वाकई जीत गयी थी...

घोंसला

सौरभ देख रहा था कि जब से छोटी बहन सिंचू उनके यहां आई है सुमन बस किचिन में ही लगी रहती है. सुबह से रात जाने कब हो जाती है उसे मालूम ही नहीं पड़ता. वह अपनी तरफ से सिंचू व उसके बच्चों की विशेष खातिरदारी करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही थी.

उसने यह भी नोटिस किया था कि इन आठ दिनों में सिंचू ने न तो सुमन की बनायी किसी भी रेसिपी की तारीफ़ करी न ही उसने उसके व्दारा की जा रही आवभगत पर प्यार के दो शब्द ही कहे. वह यह भी महसूस कर रहा था कि जैसे सिंचू हर चीज़ को बस नाप-तोल कर रही है और सुमन की हर कोशिश उसे पहले से कहीं ज़्यादा अनमना कर देती है.

आखिर आठवें दिन की रात सुमन ने उसे कमरे में बुलाकर आहिस्ता से कह ही दिया, “मैं सिंचू को खुश नहीं कर सकती और अब मैं बहुत थक भी गयी हूं सौरभ इससे ज़्यादा और कुछ मुझसे ना होगा”. वह हंसा और सुमन के गाल पर हलकी सी शरारत भरी चपत लगाते हुए बोला हां मैडम देख रहा हूं कितने चाव से तुम रोज़ नये-नये व्यंजन बनाती हो और सारा-सारा दिन

चक्कर-घिन्नी की तरह लगी रहती हो. कद्र करता हूं मैं तुम्हारी और खुद को भाग्यशाली भी समझता हूं क्योंकि तुम मेरी जिंदगी में हो. पर सच यह भी है कि सिंचू भी तो यहां घूमने आई है हमारे पास और उसे बाहर का खाना तो हमेशा से ही बहुत पसंद था. शायद... ससुराल में.....हालांकि यह कहकर मैं यह कतई नहीं जताना चाहता कि किसी के प्यार और काम को नज़रंदाज़ कर दिया जाए. इतना कह मैं सुमन का हांथ थाम हॉल में ले आया जहां सभी बैठे थे.

बाहर आकर मैंने ज़ोरदार आवाज़ में घोषणा की, अब सभी के लिए एक ब्रेकिंग न्यूज़ है. सभी मेरी ओर देखने लगे और तब मैंने बड़े रहस्यमयी आवाज़ में कहा, “एक ज़ोरदार धमाकेदार पिकनिक वाला ब्रेक तो सबके लिये बनता ही है”. और इतना कहकर मैंने सबको

फन रिसोर्ट की तीन दिनों की बुकिंग की टिकिट्स दिखायी. साथ ही सबको सुबह तड़के ही गाड़ी से निकल पड़ने की ताक़ीद भी दी कि सभी लोग सारी पैकिंग अभी रात में ही कर लेवें. रास्ते के लिए खाना-वाना पैक करने की ज़रूरत नहीं है उसका भी बढ़िया इंतज़ाम मैंने कर लिया है कहते हुए पत्नी की ओर देखा और एक आंख दबाई .

बच्चों तुम लोग भी अपने खेल-खिलौने और स्विम-सूट याद से रख लेना. मैने देखा सभी के चेहरों पर ख़ुशी छलक रही थी. सभी उत्साहित थे और मैं भी खुश था क्योंकि मैंने अपने घोंसले के तिनकों को समय रहते ही संभाल लिया था.

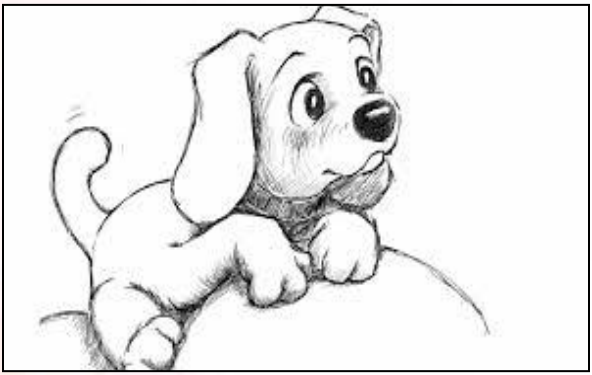

पिल्लू

रिंकू चलो बाहर छोड़ कर आओ इस पिल्ले को राकेश बेटी पर जोर से चिल्लाया. पापा प्लीज़....मुझे इसे रखने दीजिये ना मैं खुद ही इसकी देख-भाल करुँगी. नहीं....बिलकुल नहीं....मुझे घर में कुत्ते पसंद नहीं हैं. चलो बाहर निकालो इसे अभी... फ़ौरन.... कहते हुए राकेश ने पिल्ला रिंकू की गोद से झपट लिया और गेट

के बाहर लगभग फ़ेंक ही दिया. फिर लौट कर पत्नी जिया पर चिल्लाया इस लड़की को तुरंत नहलाओ और खुद भी वाश बेसिन पर जा हांथ रगड़-रगड़ कर साफ़करने लगा.

आठ साल की रिंकू समझ ही नहीं पायी कि आखिर उसका कुसूर क्या था. फिर भी चुपचाप पापा से छुपकर वो अपने दोस्त पिल्लू को मां से रोटी और दूध लेकर खिलाती रही. चार साल गुज़र गये और पिल्लू बड़ा होकर जांबाज़ व ऊँचा-पूरा हो गया. लेकिन वह रिंकू के प्यार और दोस्ती को जैसे आत्मसात कर चुका था.

उस रात रिंकू घर पर अकेली थी. राकेश व जिया ऑफिस की पार्टी में गये थे और काफी देर से लौटने वाले थे. तभी राकेश के दूर के भाई का बेटा संदीप किसी कॉम्पेटेटिव परीक्षा देने के लिये उनके घर रुकने के लिये आया.

राकेश ने रिंकू को फोन पर बता दिया कि दरवाज़ा खोलकर संदीप को अंदर बिठा ले. रिंकू ने पापा की बात मान संदीप को बैठक में बिठा दिया. किन्तु संदीप की आँखों में अनजानी सी चिंगारी देख रिंकू थोडा आशंकित हो गयी.

उसने चुपके से पिल्लू को गेट के अंदर आ जाने दिया. घर का दरवाज़ा भी उसने अन्दर से बंद ना कर बस उड़का भर दिया. अभी आधा घंटा भी न बीता था कि संदीप ने रिंकू से पीने के लिए पानी मांगा. रिंकू ने जैसे ही पानी का ग्लास उसे थमाया उसने रिंकू को पीछे से कसकर पकड़ लिया और उसके साथ ज़बरदस्ती करने लगा. इससे पहले कि वह कोई गलत हरकत कर पाता रिंकू ने पिल्लू को आवाज़ लगा दी. पलक झपकते ही पिल्लू अंदर था और संदीप उसके नीचे.

राकेश और जिया के लौटने तक पिल्लू ने संदीप को दबोच रखा था. उनके लौटने पर रिंकू ने सारी दास्तान सुनाई वो अभी भी डरी हुई थी और लगातार रोये जा रही थी. आज राकेश को अपने किये पर बेहद पछतावा हो रहा था. परन्तु निर्णय उसका आज भी वही था कि घर में कुत्ता नहीं रह सकता. लिहाज़ा वह संदीप को रात में ही लगभग घसीटता हुआ दूर किसी लॉज के बाहर छोड़ आया. परंतु आज से पिल्लू उनके घर का सदस्य था.

ज़िम्मेदारी

लोगों के घर में माता-पिता महीनों में बांटे जाते हैं परन्तु हमारे यहां वे दिन के पहरों में बांटे गये थे. सुबह से दोपहर तक बड़े भाई के घर और शाम व रात को छोटे भाई के घर.

वर्षों तक यह सिलसिला चलता रहा किन्तु मां के जाने के बाद एक बार फिर दोनों भाइयों के बीच पिताजी को लेकर बहस छिड गयी कि पिताजी कितने पहर तक किसकी ज़िम्मेदारी हैं.

वजह कि उन्होंने मां के जाने के बाद से रात्रि का भोजन करना जो त्याग दिया था.....

फलसफा

ताउम्र मैं सभी को बताता रहा कि खुश रहना है तो लोगों की गलतियों को नज़रंदाज़ करना सीखो. आज जब अपने ही बच्चे ने कुछ ऐसा किया जो मेरी नज़र में गलत था तो मुझे इतना नागवार गुज़रा कि मैंने उसे अपनी औलाद मानने से ही इनकार कर दिया. उसे घर से बेघर करने में मैंने चंद सेकंड भी नहीं लगाये और सदा के लिये बाहर का रास्ता दिखा दिया. अब

मायूस मैं अकेला रह गया हूं. काश.... कि खुद पर भी मैंने अपना ही फलसफा आज़मा लिया होता !!!

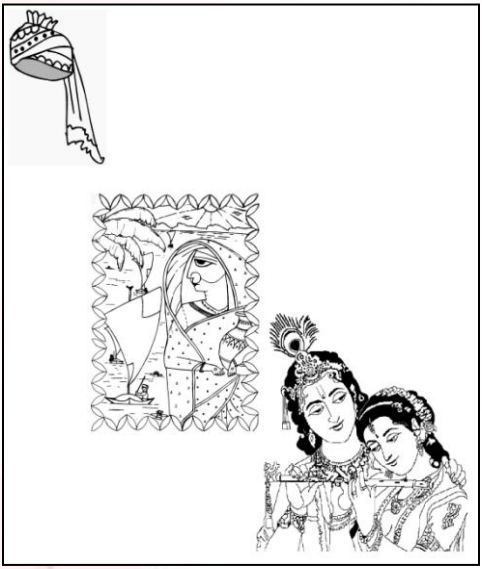

घूंघट और पगड़ी

घूंघट और पगड़ी में ज़बरदस्त बहस चल रही थी. असली मुद्दे से भटक वे इस बहस में पड़ गए थे कि दोनों में बड़ा कौन है. पगड़ी साम, दाम, दंड, भेद सब हथकंडे अपना कर घूंघट को

दबाने की कोशिश में लगी थी. दूसरी ओर घूंघट था कि पगड़ी की कोई भी दलील मानने को तैयार ही न था.

पगड़ी तनती ही चली जा रही थी आखिर मूंछों पे ताव दे घूंघट से बोली- देख घूंघट तेरा वजूद मेरी वजह से है, अगर मैं नहीं तो तू भी नहीं होगा.

मुरली बहुत देर से सब सुन रही थी और मुस्कुरा रही थी. आखिर जब बात हद से गुजरने लगी तो मुरली ने बीच-बचाव करना ही उचित समझा.

अपनी मधुर आवाज़ में एक लम्बी तान छेड़ आखिर वह पगड़ी से बोली- कब से सुन रही हूं तू हर बार घूँघट को ता ता कह आकारांत से संबोधित कर रही है जबकि स्वयं तो तू पहनी

जाती है, रक्खी जाती है, उछाली जाती है. यह पुरुष और स्त्री की लड़ाई आखिर कब तक चलती रहेगी जबकि सच यह है एक में ही दूसरा निहित है, है ना.... तो फिर बहस किस बात की ? तुम दोनों को ही यह समझना होगा कि न पगड़ी बड़ी है न ही घूंघट बड़ा है.

तुम दोनों तो एक-दूसरे के पूरक हो. बिना एक के दूजा अधूरा है. चलो अब यह बात यहीं ख़त्म कर दो और समाज को दोस्ती और साहचर्य की प्रेरणा दो. मित्रवत रहने में ही जीवन की सार्थकता है और इसी में तो जीवन का आनंद छुपा है.... यही मानवता भी है और अकाट्य सत्य भी.....

अब वे दोनों मुरली की बात से सहमत थे और मुस्कराते हुए साथ बैठे असली मुद्दों पर चर्चा कर रहे थे.

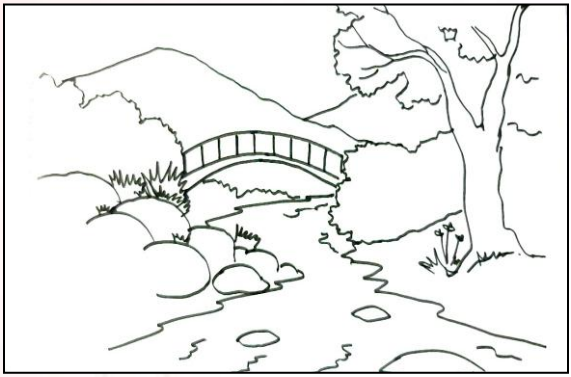

नदी

मां यह नदी क्या होती है बेटे ने मां से पूंछा. मां ने हर्षित हो कहा बेटा नदियां पानी का स्रोत हैं उनसे हमे पीने के लिये अमृत सा जल प्राप्त होता है.

अच्छा अच्छा....वही पानी ना, जो हम बोतल में खरीद कर पीते हैं!! बेटे ने अपना ज्ञान जताते हुए कहा.

हां बेटा वही पानी ..... कहते कहते उसकी आँखों में आंसू भर आये. भरे गले से नदी की कोई बहुत पुरानी तस्वीर दिखाते हुए वह बेटे से बोली, बेटा नदियां ऐसी होतीं थीं. स्वच्छ पानी से लबालब भरी हुई. फिर सहसा खुद से ही बुदबुदा उठी तुझे कैसे मालुम होगा मेरे बच्चे... तूने तो बस गंदे पानी के बदबूदार नाले ही देखे हैं. वह नाले जो बस बीमारियों का घर हैं.

बेटे को सुलाते हुए वह सोंच रही थी कि आज नदियों में पानी नहीं रेत के ट्रकों की कतारें दिखतीं हैं और झीलों की जगह बड़ी-बड़ी इमारतें. झरनों के सोते सूख गए हैं. धरती चटक रही है इन आसारों को देखते हुए क्या पता आगे मेरे बच्चों को शायद पानी क्या होता है बताने के लिए पानी से भरी बोतल की तस्वीर अपने बच्चों को दिखानी पड़े.....